2

किताबें और बच्चे

सरन काला*

किसी ने सच ही कहा है कि किताबें इंसान की सच्ची दोस्त होती हैं। किताबें केवल हमारा ज्ञान ही नहीं, बल्कि हमारी सोच का दायरा भी बढ़ाती हैं। इस लेख के ज़रिए किताबों के महत्त्व को दर्शाया गया है। बच्चों में किताबों को लेकर किस तरह दिलचस्पी जगाएँ, कैसे उन्हें किताबों के प्रति आकर्षित किया जाए, इस दिशा में यह लेख एक छोटी-सी पहल है।

कहानी सुनने का मुझे हमेशा से शौक रहा। ये आदत मेरी तब से बनी, जब मैं छोटी थी। मैं हिमालय के ऐसे इलाके में जन्मी जहाँ 3-4 महीने बर्फ गिरा करती थी। इसीलिए घर से बाहर जाने का कोई मतलब नहीं था। मैं संयुक्त परिवार में रहती थी। पड़ोसी भी दूर-दूर रहते थे। सर्दियों में सायं 4 बजे ही दरवाज़े बंद हो जाते थे। अब क्या करें, हम आग तापते हुए बुखारी के पास बैठते थे और दादी और बड़ी बहनों के साथ बस कहानियाँ सुना करते थे। कहानी सुनते-सुनते दादी का कहना था 'हूं-हूं' ज़रूर करना। मेरी दादी के पास ढेरों कहानियाँ थीं। उनमें महाभारत के किस्से आदि बच्चों को हमारे नज़दीक लाते हैं, उनकी कल्पनाशक्ति को विकसित करते हैं। उनमें आत्मविश्वास भरते हैं। कहानी हमें शिक्षक नहीं बच्चों का साथी बनाती है।

इसी अनुभव का लाभ उठाते हुए मैंने विद्या भवन जूनियर स्कूल में पुस्तकों एवं पुस्तकालय पर विशेष ध्यान दिया। जिसमें, तीन तरह से पुस्तकों के स्थान सुसज्जित किए गए। पुस्तकालय जो शाला में ऊपर अलमारियों में रहता था, उसको बच्चों के सामने लगाया। उसको मैं ''बेहतर शिक्षण सामग्री सुसज्जित कक्ष'' का दिन कहना पसंद करूँगी। इसके पीछे हमारा उद्देश्य था बच्चे केवल शिक्षक के द्वारा दिए गए ज्ञान पर ही निर्भर न रहें, बल्कि स्वयं सक्रिय रहते हुए सहजता से सोचने की ओर बढ़ें।

पुस्तकालय में तीन भाग बनाए गए। पहला भाग कक्षा पुस्तकालय था, जिसकी ज़िम्मेदारी बच्चों को दी गई। कक्षा में एक अलमारी या

* ऐश्वर्या बी.एस.सी. संस्थान, उदयपुर

रैक लगाकर उसे बच्चों का कॉर्नर बनाया गया। बच्चों को पूर्ण स्वतंत्रता दी गई कि वे पुस्तकालय प्रभारी से अपनी पसंद की पुस्तकें लेकर उनमें रखें। पुस्तकालय प्रभारी बच्चों में से चुनने को कहा गया। इस विषय पर अलग-अलग तरह के बड़े अच्छे सुझाव आए। जैसे-एक सप्ताह लड़कियों को सौंपा जाए, रजिस्टर के अनुसार आदि। अंत में निर्णय लिया गया कि कक्षा की प्रत्येक कतार में से 2-2 बच्चे लिए जाएँ।

काफी अच्छे परिणाम सामने आए। बच्चों ने अपने नियम बनाए जैसे-

- पुस्तकें पढ़कर उनकी जगह पर रखें।
- फट जाए तो चिपका देना।
- पूछकर घर ले जा सकते हैं।
- खाना खाकर पुस्तकें पढ़ सकते हैं।
- कल पुस्तकें बिखरी हुई थीं, कृपया आखिर में रखने वाला बच्चा पुस्तकें लगाकर जाए।

इन नियमों ने कक्षा व्यवस्था में सुंदर परिवर्तन किया। कई बार एक छोटी-सी स्लिप हमारे लिए भी कक्षा में पहुँचा दी जाती थी ''दो किताबें नहीं मिल रही हैं!'' या ''कुछ बच्चे रैक से किताबें लेकर अपने डेस्क में छुपा लेते हैं!'' कभी-कभी शिकायत भरे वाक्य भी लिखकर हमें बच्चे देने लगे। जैसे- पुस्तकों में से बच्चे चित्र फाड़ रहे हैं। बच्चे पुस्तकालय लीडर द्वारा लिखे नियम हमें बताने लगे। भाषा सीखने के लिए एक मार्ग नहीं अनेक मार्ग पूर्णता में सहायक हैं। इस प्रकार एक नये तरीके से भाषा कौशल का विभिन्न परिस्थितियों में विकास हो रहा था।

सभी शिक्षकों को अपनी कक्षा के छोटे से पुस्तकालय में सहयोग मिल रहा था। पंद्रह दिन बाद बच्चे इन पुस्तकों को सेंटर लाइब्रेरी से बदल कर लाते थे। जिस दिन नयी पुस्तकें आतीं बच्चों में बाँटने-छाँटने की होड़ लग जाती थी। इस हलचल में लगता पुस्तकें आलमारी से निकल नन्हे हाथों में आकर बहुत कुछ देना चाहती हैं।

लघु पुस्तकालय का एक भाग विषय कक्ष था। वहाँ प्रत्येक विषय जैसे, विज्ञान, गणित संबंधी पुस्तकें रखी गईं। जब भी पढ़ाया जाता, उनमें से चार्ट बनाने, सप्ताह की प्रोजेक्ट थीम पर लिखने-करने को शिक्षक उन्हें प्रेरित करते। बच्चे उन पुस्तकों को घर भी ले जाते। बच्चे जो भी उनमें से पढ़ते-ढूँढते-लिखते उसकी जानकारी वह अन्य बच्चों को भी देते। कई बार पाठ पढ़ते हुए कुछ बातें वे कक्षा में दोहराते, प्रश्न उठाते कि उस पुस्तक में कुछ और भी बताया है। इस विषय पुस्तकालय में बच्चों को ज्ञान बटोरने के लिए इधर-उधर दौड़ना नहीं पड़ता था। पुस्तकालय का तीसरा भाग- जूनियर स्कूल के मुख्य पुस्तकालय के बीच में बनाया गया। यह पुस्तकालय शिक्षकों, बच्चों, चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों एवं अभिभावकों को सदैव आकर्षित करता रहा। इसकी बैठक व्यवस्था नीचे दरी बिछाकर, चौकियाँ लगाकर की गई। इसमें बच्चे किसी भी कोने में या सेंटर में दीवार का सहारा लेकर पुस्तकें पढ़ सकते थे। ढेरों पुस्तकें प्रातः बच्चों के आने से पूर्व चौकियों पर रख दी जातीं। प्रत्येक विषय में एक लाइब्रेरी का कालांश भी जोड़ दिया गया। एक अलमारी में शिक्षकों के लिए पुस्तकें स्टाफ़ रूम में भी रख दी गईं, जिससे वहाँ भी पुस्तकों का लाभ लिया जा सके।

समय-समय पर पुस्तकालय प्रभारी द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी, विद्या भवन शिक्षा केंद्र से ढेरों नयी पुस्तकें बच्चों को आकर्षित करती रहीं। पुस्तकालय का रूप बदल रहा था। जिसका परिणाम बच्चों में दिन-प्रतिदिन दिखाई दे रहा था। मैंने पूर्व में जो कहा उसे दोहराना चाहूँगी-''बच्चे पुस्तकें छुपा रहे थे'' हमने इसके पीछे का कारण जानने की कोशिश की। जिन बच्चों ने पुस्तकें छुपाईं थीं, उनका कहना था, ''हमारी कहानी अधूरी रह गई थी। फिर वो किताब इधर-उधर हो जाती है।'' हमारा अगला प्रश्न था कि कहाँ छुपाई? बच्चों ने बताया कि वे किताबें दरी के नीचे या फिर आलमारी के पीछे छुपाते हैं। पुस्तकालय के कारण इतनी सरलता से पढ़ने के कौशल में वृद्धि हो रही थी।

यह जानना भी ज़रूरी था कि क्या बच्चे वास्तव में किताबों में दिलचस्पी ले रहे हैं? यह पता लगाने के लिए मैंने प्रार्थना में गिनती की कि कितने बच्चे जल्दी स्कूल आते हैं। करीब 20-25 बच्चे खड़े हुए थे। जिनमें से 10 बच्चे सुखेर जीवन ज्योति के थे बाकी बच्चे आस-पास के। मैंने बच्चों से पूछा - यहाँ आकर क्या करते हो कोई शिक्षक तो होता नहीं है। उनका कहना था ''हमें अकेले में कहानी पढ़ने का अच्छा मौका मिलता है।'' बच्चों ने अपनी पसंद की पुस्तकों के नाम भी बताए। कुछ लड़कियों ने अपनी कहानियों के शीर्षक तक लिखे हुए थे। कुछ ने उनमें चित्र भी बना रखे थे।

बच्चों की पुस्तकों में रुचि लगातार बढ़ती जा रही थी। कई बार मैंने बच्चों के बीच बैठकर देखा कि तीसरी कक्षा के बच्चे छोटे-छोटे वाक्यों में लिखे चुटकुले,पहेलियाँ, एक-दूसरे को सुनाते हैं। चित्रों की कहानियाँ पढ़ते हैं। वहीं, पाँचवीं कक्षा के बच्चे मौन पठन करते हैं। लेकिन, मुझे आश्चर्य होता था कि जो बच्चे पाठ्यपुस्तक का पाठ पढ़ते हुए कई बार बीच में शब्द के लिए रुकते थे, अब आगे बढ़ते हुए बीच में कभी नहीं पूछते, बस पढ़ते रहते हैं।

बच्चे किताबों पर खूब चर्चा करते हैं, उदाहरण देते हैं, हँसते हैं, भावात्मकता ग्रहण करते हैं, समझना उन्हें आ जाता है। कई चुनौतियाँ वे कहानी में जान लेते हैं। इस प्रकार बच्चों की कल्पना और सोच विकसित करने तथा नवीनता पाने का पुस्तकालय और कहानियाँ अच्छा श्रेष्ठ साधन है।

❑❑❑